तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम
Approaches to the Study of Comparative Politics

परम्परागत उपागम :-

(1) औपचारिक या वैधानिक संस्थागत → औपचारिक या वैधानिक उपागम संविधानों, सरकारों तथा उनकी संरचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन है। यह विभिन्न देशों के संविधानों के अध्ययन के माध्यम से विभिन्न नियमितताओं की खोज करता है तथा इनके सैद्धान्तिकरण का प्रयास करता है। तुलनात्मक राजनीति के जिन विद्वानों ने इस औपचारिक या वैधानिक उपागम को अध्ययन के रूप में प्रयुक्त किया, उनमें से विल्सन, डायसी जैसे विद्वान उल्लेखनीय हैं। समकालीन विचारकों में कार्टर, जॉन हर्ज और न्यूमैन जैसे लोगों के नाम उल्लेखनीय हैं। सामान्यतः 19वीं सदी को संविधानवाद का युग कहा जाता है तथा अनेक नए राज्यों ने अपने संविधानों का निर्माण किया।

आलोचना :- औपचारिक वैधानिक उपागम की अनेक आधारों पर आलोचना की गई, क्योंकि आलोचकों के अनुसार तुलनात्मक राजनीति के इस उपागम में संविधान व संस्थाओं के अध्ययन पर बल दिया गया जबकि सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की उपेक्षा की गई। जैसे ब्रिटेन में सैद्धान्तिक रूप से सम्राट सर्वोच्च है किन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा नहीं है।

ऐतिहासिक उपागम :- तुलनात्मक राजनीति के ऐतिहासिक उपागम के समर्थकों में या जिन विचारकों ने इस उपागम का प्रयोग किया, उनमें अरस्तू, माण्टेस्क्यू, हीगल, मार्क्स, हेनरी मेन, जेंक्स तथा मैकाइवर हैं। उदाहरण के लिए हीगल के विचारों में राज्य के विकास का ऐतिहासिक उल्लेख पाया जाता है तथा हीगल ने पौर्वात्य राज्यों और पश्चिमी राज्यों के मध्य अंतर बताया। उन्होंने जर्मनी राज्य-राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ कहा। ऐतिहासिक उपागम के समर्थक राजनीतिक संस्थाओं

Scanned with OKEN Scanner

के विकास पर अपना बल प्रदान करते हैं। सेबाइन ने भी तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक के अध्ययन को अपरिहार्य माना।

आलोचना :→ ऐतिहासिक उपागम के संबंध में सबसे बड़ी समस्या है कि इसे विभिन्न विद्वानों, विभिन्न रूपों में व्याख्यायित करते हैं। आलोचकों के अनुसार, अतीत पर ज्यादा बल देने से वर्तमान को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता है।

~~तुलनात्मक राजनीति के~~ क्षेत्र उपागम :→ मैक्रिडिस के अनुसार जिन क्षेत्रों में विभिन्न देशों के मध्य प्रवृत्तियाँ समानता विद्यमान होती हैं, वहाँ राजनीतिक संस्थाओं को अपनाना आसान है। क्षेत्र उपागम द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अत्यधिक लोकप्रिय हुआ क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद (USA तथा USSR) दोनों महाशक्तियों ने सब क्षेत्रों में अपने प्रभाव के विस्तार का प्रयत्न किया। पश्चिमी विद्वानों ने अनेक गैर-पश्चिमी समूहों के अध्ययन का प्रयत्न किया। उदाहरण के लिए, ड्यूक ने लैटिन अमेरिकी क्षेत्रों का अध्ययन किया, मैक्कोमि ने दक्षिण-पूर्वी एशियाई क्षेत्रों का अध्ययन किया। एंडरसन ने यूरोपीय क्षेत्र का अध्ययन किया तथा हरारी ने मध्य-पूर्व (पश्चिमी एशिया) का अध्ययन किया।

कमियाँ :→ आलोचकों के अनुसार, एक भौगोलिक क्षेत्र में या भौगोलिक निकटता देशों के मध्य या राजनीतिक व्यवस्थाओं के मध्य समान ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या जातीय समानता स्थापित नहीं होती।

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम :→ अमेरिका में होने वाली व्यवहारवादी क्रांति के परिणाम स्वरूप राजनीति विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीतयुद्ध के दौर में पूंजीवाद एवं साम्यवाद के बीच वैचारिक संघर्ष विद्यमान था, जहाँ मार्क्सवादी स्वयं को वैज्ञानिक होने का दावा करते थे, जिसके विरोध में अमेरिकन पोलिटिकल साइंस एसोसिएशन (APSA) ने व्यवहारवादी उपागम के माध्यम से [illegible] को वैज्ञानिक

रूप से प्रस्तुत किया। परिणामस्वरूप तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम का जन्म हुआ।

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम :- तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम का आधार शब्द मिचेल्स और मौरिस डुवर्जर की रचनाओं में विद्यमान है, जिन्होंने संविधान एवं सरकारों की तुलना की बजाय, दलीय प्रणाली की तुलना पर ध्यान दिया। परन्तु आधुनिक उपागम का प्रभावी विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद देखा गया जिसमें :—

Roy C. Macridis - "The Study of Comparative Government (1966)"

Harry Eckstein - "A Perspective on Comparative Politics"

David Apter, Almond and Powell - "Political Development"

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम में राज्य एवं सरकार के बीच तुलना करने की बजाय राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच तुलना करने का प्रयास किया गया है। तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम में विकासशील देशों के समाजों पर विशेष बल दिया गया। इसलिए डेविड कोलमैन, आमण्ड एवं वर्बा ने विकासशील देशों में भारत, श्रीलंका एवं लैटिन अमेरिकी देशों के अध्ययन पर बल दिया, जिससे तुलनात्मक राजनीति के एक समग्र एवं व्यवस्थित दृष्टिकोण का विकास हो सका।

डेविड ईस्टन ने आगत-निर्गत तथा आमण्ड एवं पॉवेल ने संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण से राजनीतिक व्यवस्था के बीच तुलना करने का प्रयास किया और इन्होंने अपने विचारों को सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं की तुलना के लिए समान रूप से उपयोगी माना। व्यवस्था उपागम का सैद्धांतिक आधार लुडविग बर्टलान्फी ने दिया, जो एक जीव वैज्ञानिक थे। उन्होंने सामान्य व्यवस्था सिद्धांत का निर्माण प्रतिपादित किया।

व्यवस्था सिद्धांत, व्यवहारवादी क्रांति का परिणाम है।